|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 12. Mai 2024 | | |
| **7. Sonntag der Osterzeit B** | | |
| Erste Lesung: Apg 1,15-17.20a.c-26; Zweite Lesung: 1 Joh 4,11-16; Evangelium: Joh 17,6a.11b-19 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 319, 1-3 | Christ fuhr gen Himmel |
|  | GL 339, 1-4 | Ihr Christen |
|  | GL 348 | Nun bitten wir den Heiligen Geist |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 157 | Herr, erbarme dich |
|  | GL 165 | Send uns deines Geistes Kraft |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 173, 1+2 | Gloria in excelsis Deo |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 103, 1-2.11-12.19-20b | |
|  | Kehrverse: |  |
|  | GL 79, 1 | Der Name des Herrn |
|  | GL 57, 1 | Meine Seele, preise den Herrn |
|  | oder Psalmenlied: |  |
|  | GL 392, 1+4+5 | Lobe den Herren |
|  | oder Lied: | |
|  | GL 346, 1-3 | Atme in uns, Heiliger Geist |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Ich lasse euch nicht als Waisen zurück.* | |
|  | *Ich komme zu euch.* | |
|  | *Dann wird euer Herz sich freuen.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 792, 1+2 | Ich glaube, Herr, mit Zuversicht |
|  | GL 180, 1+2 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 484, 1+3-6 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 784 | Send deinen Geist |
|  |  |  |
| Sanctus | GL 198 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 348, 2!+3 | Du heller Schein |
|  | GL 372, 1-4 | Morgenstern der finstern Nacht |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 536, 1+5 | Gegrüßet seist du, Königin |
|  | oder ein anderes Marienlied | |